

बकरी पालन

1.	परिचय
2.	बकरियों की नस्लें
3.	आवास और प्रबंधन
4.	चारा और आहार प्रबंधन



1 – परिचय

बकरी पालन एक प्राचीन और लोकप्रिय व्यवसाय है जो दुनिया भर में विशेष रूप से ग्रामीण इलाकों में लोगों के जीवनयापन का महत्वपूर्ण स्रोत रहा है। भारत जैसे कृषि प्रधान देश में बकरी पालन को विशेष महत्व प्राप्त है, जहां इसे छोटे और सीमांत किसानों के लिए एक प्रभावी और आर्थिक रूप से लाभकारी व्यवसाय माना जाता है। बकरियां आसानी से विभिन्न प्रकार के वातावरण और जलवायु में जीवित रह सकती हैं, जिससे यह अन्य पशुधन की तुलना में अधिक अनुकूल और प्रबंधनीय पशु बन जाती हैं।

बकरी पालन के कई लाभ हैं, जिनमें प्रमुख हैं इसकी कम प्रारंभिक लागत, तेजी से प्रजनन क्षमता, और दूध, मांस, और खाद्य सामग्री के रूप में उच्च उत्पादन। बकरी का दूध पौष्टिकता में गाय के दूध से कहीं अधिक समृद्ध होता है और यह आसानी से पचने योग्य होता है। यह विशेष रूप से बच्चों, वृद्धों, और बीमार व्यक्तियों के लिए लाभदायक माना जाता है। इसके अलावा, बकरी के मांस की भी भारतीय और अंतरराष्ट्रीय बाजार में काफी मांग है। बकरी का मांस प्रोटीन से भरपूर और कम फैट वाला होता है, जो इसे एक स्वस्थ विकल्प बनाता है।

बकरी पालन के साथ-साथ इसके उप-उत्पाद जैसे कि बकरी की खाल, बाल, और खाद भी आर्थिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हैं। बकरी की खाल का उपयोग विभिन्न प्रकार के चमड़े के उत्पाद बनाने में किया जाता है, जबकि बकरी के बालों का उपयोग कंबल, कालीन और अन्य उत्पाद बनाने में होता है। इसके अलावा, बकरी का मल-मूत्र भी एक उच्च गुणवत्ता वाली जैविक खाद के रूप में काम करता है, जो कृषि में फसल उत्पादन को बढ़ाने में सहायक होता है।

बकरी पालन के व्यवसाय में सफल होने के लिए कुछ प्रमुख पहलुओं पर ध्यान देना आवश्यक है। इसमें सही नस्ल का चयन, उचित प्रजनन और आहार प्रबंधन, और रोगों से बचाव के उपाय प्रमुख हैं। बकरी पालन के लिए उचित आश्रय और देखभाल भी आवश्यक है, जिससे बकरियों को स्वास्थ्य समस्याओं से बचाया जा सके और उनके उत्पादन क्षमता को बढ़ाया जा सके।

भारत में सरकार भी बकरी पालन को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न योजनाएं और सब्सिडी प्रदान करती है, जिससे छोटे किसानों को इस व्यवसाय को शुरू करने और सफलतापूर्वक चलाने में मदद मिलती है। बकरी पालन का व्यवसाय न केवल आर्थिक दृष्टिकोण से लाभप्रद है, बल्कि यह ग्रामीण विकास और महिला

सशक्तिकरण के लिए भी एक महत्वपूर्ण साधन साबित हो सकता है। बकरी पालन का महत्व केवल दूध और मांस उत्पादन तक सीमित नहीं है। बकरियों का दूध पोषण से भरपूर होता है और उसे सुपाच्य और औषधीय गुणों से युक्त माना जाता है। यह शिशुओं, वृद्धों और बीमार व्यक्तियों के लिए विशेष रूप से फायदेमंद होता है। इसके अलावा, बकरियों से प्राप्त होने वाला मांस भी उच्च गुणवत्ता वाला होता है और इसे कई प्रकार के व्यंजनों में उपयोग किया जाता है। बकरी के मांस की मांग न केवल ग्रामीण क्षेत्रों में, बल्कि शहरी क्षेत्रों में भी तेजी से बढ़ रही है। इसके अलावा, बकरियों की खाल, बाल, और खाद भी कृषि और उद्योगों में उपयोगी हैं। बकरी पालन का सबसे बड़ा लाभ यह है कि यह व्यवसाय छोटे निवेश के साथ शुरू किया जा सकता है और इसमें अपेक्षाकृत कम जोखिम होता है। बकरियों की प्रजनन दर उच्च होती है, जिससे उनकी संख्या जल्दी बढ़ती है और यह व्यवसाय तेजी से विकसित हो सकता है। बकरियों का पालन करने के लिए विशेष प्रबंधन की आवश्यकता नहीं होती, वे प्राकृतिक चारा पर भी अच्छी तरह पनप सकती हैं। ग्रामीण इलाकों में, जहां चारा और पानी की उपलब्धता सीमित हो सकती है, बकरियों का पालन एक आदर्श विकल्प साबित होता है।

2 – बकरियों की नस्लें

बकरियों की विभिन्न नस्लें भारत और दुनिया भर में पाई जाती हैं, जो उनके उद्देश्य (जैसे दूध, मांस, या फाइबर उत्पादन) और पर्यावरणीय परिस्थितियों के अनुसार भिन्न होती हैं। यहां कुछ प्रमुख बकरी नस्लों की जानकारी दी गई है:

❖ जमुनापारी (Jamunapari)

- **मूल स्थान:** उत्तर प्रदेश, भारत।
- **विशेषताएँ:** जमुनापारी बकरी बड़ी, लंबी, और अच्छी कद-काठी की होती है। यह नस्ल अपने उच्च दूध उत्पादन के लिए जानी जाती है, और इसके दूध में उच्च वसा की मात्रा होती है। इसके अलावा, इसका मांस भी उच्च गुणवत्ता का होता है।
- **पालन की अनुकूलता:** यह नस्ल बड़ी जगह और अच्छी देखभाल की मांग करती है, इसलिए व्यावसायिक पालन के लिए उपयुक्त है।

❖ बरबरी (Barbari)

- **मूल स्थान:** उत्तर प्रदेश और राजस्थान, भारत।
- **विशेषताएँ:** बरबरी बकरियाँ छोटी कद-काठी की होती हैं और उनकी प्रजनन क्षमता बहुत अच्छी होती है। ये कम चारे में भी अच्छा उत्पादन देती हैं, और इनका मांस भी उच्च गुणवत्ता का होता है।
- **पालन की अनुकूलता:** यह नस्ल छोटे किसान और ग्रामीण क्षेत्रों में पालन के लिए उपयुक्त है।

❖ सिरोही (Sirohi)

- **मूल स्थान:** राजस्थान, भारत।
- **विशेषताएँ:** सिरोही बकरियाँ मजबूत, मध्यम आकार की होती हैं और ये कठोर जलवायु परिस्थितियों को सहन कर सकती हैं। ये नस्ल मुख्य रूप से मांस उत्पादन के लिए पाली जाती है, लेकिन इसका दूध उत्पादन भी पर्याप्त होता है।
- **पालन की अनुकूलता:** यह नस्ल विभिन्न पर्यावरणीय परिस्थितियों में अनुकूल रहती है, इसलिए विभिन्न क्षेत्रों में पालन के लिए उपयुक्त है।

❖ बीटल (Beetal)

- **मूल स्थान:** पंजाब, भारत।
- **विशेषताएँ:** बीटल बकरी एक बड़ी और मजबूत नस्ल है, जो उच्च दूध और मांस उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है। इनका दूध उच्च वसा युक्त होता है, और मांस की गुणवत्ता भी उत्तम होती है।
- **पालन की अनुकूलता:** यह नस्ल व्यावसायिक पालन के लिए आदर्श है, खासकर डेयरी और मांस उत्पादन के लिए।

❖ तोतापुरी (Toggenburg)

- **मूल स्थान:** स्विट्जरलैंड, लेकिन अब भारत में भी पाई जाती है।
- **विशेषताएँ:** यह नस्ल अपनी उच्च दूध उत्पादन क्षमता के लिए प्रसिद्ध है, और इसके दूध में कम वसा की मात्रा होती है। यह नस्ल कठोर जलवायु में भी आसानी से अनुकूल हो जाती है।
- **पालन की अनुकूलता:** पर्वतीय और ठंडे क्षेत्रों में पालन के लिए उपयुक्त है।

❖ अल्पाइन (Alpine)

- मूल स्थान: फ्रांस और स्विट्जरलैंड।
- विशेषताएँ: अल्पाइन बकरियाँ अत्यधिक दूध उत्पादन के लिए जानी जाती हैं। ये कठोर जलवायु में भी सहनशील होती हैं और दूध की गुणवत्ता उच्च होती है।
- पालन की अनुकूलता: ये नस्ल पर्वतीय और ठंडे जलवायु क्षेत्रों में पालन के लिए आदर्श है।

❖ ब्लैक बंगाल (Black Bengal)

- मूल स्थान: पश्चिम बंगाल, बिहार, ओडिशा।
- विशेषताएँ: ब्लैक बंगाल बकरी छोटे आकार की होती है, लेकिन इसकी प्रजनन क्षमता उच्च होती है। इसके मांस की गुणवत्ता बहुत अच्छी होती है और इसके चमड़े की भी अच्छी मांग होती है।
- पालन की अनुकूलता: छोटे किसान और सीमांत क्षेत्रों के लिए उपयुक्त।

❖ जखराना (Jakhrana)

- मूल स्थान: राजस्थान, भारत।
- विशेषताएँ: जखराना नस्ल मुख्य रूप से दूध उत्पादन के लिए पाली जाती है। इसका दूध उच्च गुणवत्ता का होता है और यह नस्ल बहुत सहनशील होती है।
- पालन की अनुकूलता: यह नस्ल बड़े डेयरी फार्मिंग के लिए उपयुक्त है।

❖ गुज्जराटी (Gujrati)

- मूल स्थान: गुजरात, भारत।
- विशेषताएँ: यह नस्ल मध्यम आकार की होती है और मुख्य रूप से मांस उत्पादन के लिए पाली जाती है। इसका दूध उत्पादन भी संतोषजनक होता है।
- पालन की अनुकूलता: ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में पालन के लिए उपयुक्त।

3 – आवास और प्रबंधन

बकरियों के उचित आवास और प्रबंधन के लिए समझना अत्यंत महत्वपूर्ण है कि एक सफल बकरी पालन के लिए एक आरामदायक और स्वच्छ वातावरण कैसे तैयार किया जाए। बकरियों के आवास की डिजाइन और प्रबंधन न केवल उनकी स्वास्थ्य स्थिति को प्रभावित करता है बल्कि उनकी उत्पादकता और सामान्य कल्याण पर भी सीधा असर डालता है। एक आदर्श बकरी आश्रय में कुछ महत्वपूर्ण तत्व होते हैं जिन्हें ध्यान में रखना आवश्यक है।

पहले, आवास की स्थिति को सही से प्रबंधित करना आवश्यक है। बकरियों के लिए एक अच्छी तरह से डिजाइन किया गया आश्रय आवश्यक है, जो उन्हें मौसम की चरम स्थितियों से बचा सके। यह आश्रय न केवल बारिश और धूप से रक्षा करता है बल्कि सर्दी और गर्मी के प्रतिकूल प्रभावों से भी बचाता है। इसलिए, आवास में वेंटिलेशन की उचित व्यवस्था होना चाहिए ताकि हवा का प्रवाह बना रहे और गंदगी और नमी का संचय न हो। वेंटिलेशन की कमी से बकरियों में सांस की बीमारियाँ और अन्य स्वास्थ्य समस्याएँ हो सकती हैं।

आवास का आकार बकरियों की संख्या और उनके आकार के अनुसार होना चाहिए। एक बकरी के लिए आवश्यक न्यूनतम स्थान 4-6 वर्ग फुट होना चाहिए, और समूह में बकरियों को अधिक स्थान देना चाहिए ताकि वे आराम से रह सकें। आवास की मंजिल को घास, भूसे, या चिप्स से ढकना चाहिए जो गंदगी और नमी को अवशोषित कर सके। यह न केवल सफाई को आसान बनाता है बल्कि बकरियों को एक आरामदायक और स्वच्छ वातावरण प्रदान करता है। सफाई और कीट नियंत्रण के लिए नियमित रूप से आश्रय को साफ करना और कीटनाशक का प्रयोग करना जरूरी है।

इसके अलावा, बकरियों के आवास में फीडिंग और वॉटरिंग एरिया भी होना चाहिए। फीडिंग ट्रे और पानी के बर्तन को स्वच्छ बनाए रखना और नियमित रूप से बदलना महत्वपूर्ण है, ताकि बकरियाँ हमेशा ताजे और पोषक तत्वों से भरपूर आहार और पानी प्राप्त कर सकें। खाद्य और पानी की व्यवस्था इस तरह से की जानी चाहिए कि बकरियाँ आराम से खा और पी सकें और आपस में टकराएं नहीं। साथ ही, यह ध्यान रखना चाहिए कि पानी का स्रोत साफ और प्रदूषण रहित हो, क्योंकि गंदा पानी बकरियों में बीमारियाँ फैला सकता है।

स्वास्थ्य प्रबंधन भी बकरी पालन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। बकरियों को नियमित रूप से टीकाकरण और डीवर्मिंग की आवश्यकता होती है ताकि वे बीमारियों से मुक्त रहें। एक अच्छा प्रबंधन प्रणाली यह सुनिश्चित करती है कि बकरियों का स्वास्थ्य निरंतर रूप से निगरानी में रहे और किसी भी स्वास्थ्य समस्या को समय पर संबोधित किया जाए। इसके अलावा, बकरियों के स्वास्थ्य को सुनिश्चित करने के लिए नियमित रूप से उनके पैरों की जाँच और क्लीनिंग करनी चाहिए, क्योंकि गंदे और नकारात्मक परिस्थितियों में पैरों में संक्रमण हो सकता है।

आवास के अंदर और बाहर की सुरक्षा भी महत्वपूर्ण है। बकरियों को संभावित शिकारी, जैसे कुत्ते या अन्य जंगली जानवरों, से सुरक्षित रखने के लिए आश्रय को मजबूत और सुरक्षित होना चाहिए। इसके लिए बाड़ और अन्य सुरक्षा उपायों का सही तरीके से निर्माण और रखरखाव करना चाहिए। बकरियों को किसी भी प्रकार के खतरनाक तत्वों से दूर रखना चाहिए, जैसे तेज वस्तुएं या घातक पौधे, जो उनकी सुरक्षा और स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकते हैं।

4 – चारा और आहार प्रबंधन

चारा और आहार प्रबंधन बकरी पालन का एक महत्वपूर्ण पहलू है, जो न केवल बकरियों की स्वास्थ्य स्थिति को बनाए रखने में सहायक होता है, बल्कि उनके उत्पादन स्तर को भी सीधे प्रभावित करता है। बकरियों की पोषण संबंधी आवश्यकताओं को समझना और उन्हें सही तरीके से पूरा करना, एक सफल बकरी पालन व्यवसाय की कुंजी है।

बकरियों के आहार में मुख्य रूप से चार प्रमुख तत्व होते हैं: प्रोटीन, ऊर्जा, विटामिन, और खनिज। प्रोटीन बकरियों के विकास, प्रजनन, और दूध उत्पादन के लिए आवश्यक होता है, जबकि ऊर्जा उनके दैनिक क्रियाकलापों और विकास के लिए आवश्यक है। विटामिन और खनिज बकरियों की सामान्य स्वास्थ्य स्थिति और प्रतिरक्षा प्रणाली को सशक्त बनाए रखने में सहायक होते हैं।

चारा प्रबंधन में पहले कदम के रूप में, यह आवश्यक है कि बकरियों को सही मात्रा में उच्च गुणवत्ता का चारा उपलब्ध कराया जाए। चारा के प्रकार में हरी घास, चारा फसलें (जैसे कि बिनावले,

जई, और गेहूं), और सूखा चारा शामिल होते हैं। हरी घास, जो बकरियों के प्राकृतिक आहार का हिस्सा है, विटामिन, खनिज, और फाइबर का अच्छा स्रोत होती है। हालांकि, हरी घास का उपलब्धता मौसम और स्थान पर निर्भर करता है। सूखा चारा और चारा फसलें वर्षभर में बकरियों को सही पोषण प्रदान करने के लिए एक स्थिर स्रोत होते हैं, विशेष रूप से उन महीनों में जब हरी घास की उपलब्धता कम हो जाती है।

आहार प्रबंधन में बकरियों के लिए सही अनुपात में सूखा चारा और हरी चारा का मिश्रण शामिल करना चाहिए। एक स्वस्थ आहार में मुख्य रूप से हरे चारे को प्राथमिकता दी जाती है, लेकिन सूखा चारा और अन्य पूरक खाद्य पदार्थों का भी उपयोग किया जाता है। बकरियों के आहार में अन्य पूरक तत्वों, जैसे कि तेल, बीन्स, और मछली का आटा, भी शामिल किया जा सकता है, जो उन्हें अतिरिक्त प्रोटीन और ऊर्जा प्रदान करते हैं।

प्रोटीन युक्त चारा जैसे कि सोयाबीन, मूँगफली का पत्थर, और अन्य दलहन खाद्य पदार्थ बकरियों के स्वास्थ्य को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। खासकर गर्भवती और दूध देने वाली

बकरियों के लिए प्रोटीन की मात्रा बढ़ानी चाहिए ताकि उनके शरीर की बढ़ती जरूरतों को पूरा किया जा सके। इसके अलावा, बकरियों के आहार में खनिज जैसे कि कैल्शियम, फास्फोरस, और नमक का उचित संतुलन बनाए रखना आवश्यक होता है, क्योंकि ये तत्व उनकी हड्डियों और दांतों के विकास के लिए आवश्यक हैं और उनके शरीर के अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को भी समर्थन प्रदान करते हैं।

विटामिन्स भी बकरियों के स्वास्थ्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विटामिन A, D, और E विशेष रूप से महत्वपूर्ण होते हैं। विटामिन A की कमी से दृष्टि समस्याएँ और वृद्धि की समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं, जबकि विटामिन D हड्डियों की मजबूती के लिए आवश्यक है। विटामिन E एक प्रमुख एंटीऑक्सीडेंट है जो बकरियों की प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत बनाने में मदद करता है। विटामिनों की कमी को पूरा करने के लिए, विशेष रूप से विटामिन की कमी वाले क्षेत्रों में, विटामिन सप्लीमेंट्स और खाद्य पूरक का उपयोग किया जा सकता है।

सही आहार प्रबंधन केवल बकरियों के आहार में शामिल चारे और खाद्य पदार्थों की मात्रा और गुणवत्ता पर निर्भर नहीं करता, बल्कि यह भी महत्वपूर्ण है कि बकरियों को नियमित रूप से और संतुलित

आहार प्रदान किया जाए। बकरियों को भोजन की सही मात्रा सुनिश्चित करने के लिए नियमित रूप से उनके आहार की निगरानी करनी चाहिए। ज्यादा या कम भोजन से संबंधित समस्याओं को पहचानने और उनका समाधान करने के लिए, बकरियों के शरीर के वजन, दूध उत्पादन, और सामान्य स्वास्थ्य स्थिति पर ध्यान देना चाहिए। वसा भी बकरियों के आहार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होता है, जो उन्हें ऊर्जा प्रदान करता है। हालांकि, वसा की मात्रा संतुलित मात्रा में होनी चाहिए, क्योंकि अधिक वसा भी स्वास्थ्य समस्याएँ पैदा कर सकती है। उच्च गुणवत्ता वाले वसा स्रोतों में सोया तेल, मूँगफली का तेल, और कॉर्न ऑयल शामिल हैं, जिन्हें आहार में शामिल किया जा सकता है।

विटामिन्स और खनिज बकरियों की सेहत के लिए आवश्यक होते हैं। विटामिन A, D, और E, और खनिज जैसे कैल्शियम, फास्फोरस, और आयरन बकरियों के आहार में शामिल होना चाहिए। विटामिन और खनिजों की कमी से बकरियों में वृद्धि की कमी, प्रजनन समस्याएँ, और अन्य स्वास्थ्य समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। विशेष रूप से, गर्भवती और दूध देने वाली बकरियों को इन पोषक तत्वों की अधिक मात्रा की आवश्यकता होती है। इसके

लिए, विशेष विटामिन और खनिज सप्लीमेंट्स का उपयोग किया जा सकता है, जो पशुपालन की दुकानों में उपलब्ध होते हैं।

आहार प्रबंधन में बकरियों के पानी की जरूरत को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। बकरियों को स्वच्छ और ताजे पानी की निरंतर उपलब्धता सुनिश्चित करनी चाहिए, क्योंकि पानी की कमी से बकरियों की सेहत प्रभावित हो सकती है और उनके भोजन की पाचन क्षमता में भी कमी आ सकती है। पानी की सही मात्रा में आपूर्ति करने के लिए, नियमित रूप से पानी की गुणवत्ता की जांच करनी चाहिए और जरूरत के अनुसार पानी के स्रोतों की सफाई करनी चाहिए।

सही आहार प्रबंधन और चारा प्रबंधन के माध्यम से बकरियों की स्वास्थ्य स्थिति को बनाए रखना, उनके उत्पादन को बढ़ाना, और उनकी जीवन गुणवत्ता को सुधारना संभव है। एक सुव्यवस्थित आहार योजना और उच्च गुणवत्ता वाले चारे का नियमित उपयोग बकरी पालन में सफलता की कुंजी होती है। इस प्रकार, बकरियों की उचित देखभाल और उनकी पोषण संबंधी आवश्यकताओं का सही तरीके से ध्यान रखकर, एक लाभकारी और स्थिर बकरी पालन व्यवसाय सुनिश्चित किया जा सकता है।